-- :: > धोबिडा सा धोवै गुरु का कापड़ा रे < :: ---

सतगुरु सायब बंदा एक है रे
भोली सधुड़ा से किसोड़ी भिरांत म्हारा बीरा रे
साथ रे पियालो रल मिल आ पीवै रे

धोबिडा सा धोवै गुरु का कापड़ा रे, कोई तनमन साबण ल्याय म्हारा बीरा रे |
तन रें सिला मन साबणा रे, रे कोई मैला मैला धुप धुप ज्याय म्हारा बीरा रे ||

कायारे नगरिये में आमली रे, ज्यापर कोयलडया तो करे है किलोल म्हारा बीरा रे |
कोयलडया का शबद सुहावना रे, ओ बेतो उड़ उड़ लागे गुरु के पाँव म्हारा बीरा रे ||

काया रे नगरीये में हाटडी रे, ज्या पर बिनज करे साहूकार म्हारा बीरा रे |
कई रे करोड़ी धज हो चल्या रे, ओ कई गया है जमारो हार म्हारा बीरा रे ||

सीप रे समन्दरिये में निपजै रे, ओ कोई मोतीडा तो निपजै सीपा माय म्हाराबीरा रे|
बूँद रे पड़े है हरी के नाम कि रे, कोई लखियो बिरला सा साध म्हारा बीरा रे ||

सतगुरु शबद ऊचारिया रे, रे कोई रटीयो सांस म सांस म्हारा बीरा रे |
देव रे डूंगर पूरी बोलिया रे, ज्यरो सत अमरपुर बॉस म्हारा बीरा रे ||

सतगुरु सायब बंदा एक है रे
भोली सधुड़ा से किसोड़ी भिरांत म्हारा बीरा रे
साथ रे पियालो रल मिल आ पीवै रे

बोल शंकर भगवान् कि जय....
बोल नाथ जी महाराज की जय.